The International Journal of Advanced Research in Multidisciplinary Sciences
(IJARMS)
Volume 3 Issue 2, Nov. 2020

/kelfui{krk vkj Hkkjrh; lLd'fr lnHk e xk/kh th dk fopkj n'ku

M,- 'kdj ;kno
(राजनीति विज्ञान)
बी0एन0एम0यू0, मधेपुरा (बिहार)
ग्राम– तेलियाहाट, पोस्ट– सरलेला, थाना– सिमरी बख्तियारपुर, जिला– सहरसा (बिहार)

धर्मनिरपेक्षता और भारतीय संस्कृति के महान पुजारी गाँधी जी थे । उन्होंने धर्मनिरपेक्षता और भारतीय संस्कृति बहुत ही मार्मिक ढ़ंग से अपने पुस्तक हिन्द स्वराज सत्य के प्रयोग में वृहत रूप से व्यख्या किया है। भारतीय दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्रा है और इसकी बुनियाद धर्मनिरपेक्षता पर रखी गई है। भारत के संविधान निर्माता इस सत्य से वाकिपफ थे कि इस देश में अनेक धर्मों, जातियों तथा वर्गों के लोग रहते हैं। उन सबके साथ न्याय करने के लिए यह जरूरी है कि देश संविधान धर्मनिरपेक्षता हो ।

गांधी जी के नेतृत्व में स्वाधीनता की लड़ाई वाले तथा महान जीवन मूल्यों के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा देने वाले नेताओं में भारत की जनता के लिए एक ऐसा संविधान दिया जिसमें सबकी भावनाओं का आदर था, सबकी समस्याओं का समाधान तथा किसी धार्म को छोटा नहीं माना गया था।

धर्म को बिल्कुल निजी मामला मानते हुए संविधान निर्माताओं ने सर्वधर्म समभाव पर आधारित एक ऐसे संविधान की रचना की जिसमें धार्मिक विश्वासों व रस्म–रिवाजों की सबको पूरी जानकारी दी गई है। कोई किसी के धार्मिक मामलों में दखल नहीं देगा । सबको अपने–अपने धर्मों का पालन अपने अनुसार करते हुए राष्ट्रीय विकास में बराबर योगदान देना होगा। राष्ट्र सबकी खुशहाली तथा तरक्की के लिए समान रूप से प्रयास करेगा। धर्म के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा ।

धर्मनिरपेक्षता की यह नीति कुछ दशकों तक पूरी तरह सपफल रही। इसके कारण राष्ट्रीय विकास तथ देश–चलाने की प्रक्रिया में कभी कोई बाधा नहीं आई, परंतु धीरे–धीरे राजनीति ने अपने पैर साम्प्रदायिकता का प्रवेश होने लगा और साम्प्रदायिकता की राजनीति ने अपने पैर पसारने शुरू कर दिए ।

वैसे तो गांधीजी की हत्या से ही यह संदेश मिल गया था कि देश में सर्वधर्म समभाव की सोच एक बड़ा आदर्श तो बनी रहेगी, परंतु व्यवहार में उसे उतारकर लाना कठिन हो जाएगा।

गांधी जी भी यही चाहते थे कि देश में साम्प्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि लोग धर्म के प्रति कट्टरता त्याग दें और दूसरे धर्मों की शिक्षाओं को भी उसी तरह अपने व्यवहार में उतारें जिस तरह अपने धर्म की शिक्षाओं को उतारने में विश्वास रखते हैं। क्योंकि गांधीजी जानते थे कि धर्मों के बाहरी कलेवर अलग–अलग हो सकते हैं, उनके प्रतीक चिन्ह और पहचानें अलग–अलग हो सकती हैं, पंरतु उनकी शिक्षाएं लगभग एक जैसी ही हैं। यदि लोग ऊपर के अंतर करने वाले रूप से ध्यान हटाकर केवल शिक्षओं पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें तो उनके बीच धर्मों के कारण होने वाले टकराव समाप्त हो जाएंगे और धीर–धीरे धार्मिक कट्टरता विलीन होते जाने से सभी धर्मों का सार तत्त्व जिस अध्यात्म कहा जाता है, व्यवहार में आ जाएगा ।

अध्यात्म जब सभी धर्म के अनुयाइयों की समझ में आ जाएगा, उनकी निष्ठाएं जब अध्यात्म में गहरी उतर जाएंगी, जब वे अध्यात्म के रहस्य को जान जाएंगे तब धर्मां के आवरण अपने आप उतर जाएंगे और मानव धर्म की स्थापना स्वतः हो जाएगी ।

गांधी जी की तरह ही डॉक्टर कलाम की स्वप्नदर्शी हैं। वे भी यही चाहते हैं कि भारत के लोगों को विभाजित करने वाली दुष्पप्रवृत्ति धार्मिक कट्टरता खत्म हो और लोग एक राष्ट्रीय भावना तथा मानवीय भावना से प्रेरित होकर अध्यात्म की जमीन पर एकजुट होकर खड़े हो जाएं। डॉक्टर कलाम जानते हैं कि धार्मिक कट्टरता के कारण इस देश ने भारी कीमत चुकाई है।

धार्मिक कट्टरता ने लाखों की जानें ली हैं तथा करोड़ों को अपनी जड़ों से उखाड़ दिया है। स्त्रियों और बच्चों को धार्मिक कट्टरता से उपजी साम्प्रदायिक हिंसा ने गहरे जख्म दिए हैं, जिनके साथ उन्हें अपने पूरे–पूरे जीवन जीने पड़े हैं।

सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ है कि राष्ट्र की ताकतें बंटी हैं और विकास की प्रक्रिया पूरी तरह शुरू नहीं हो पाई है। आज भी धार्मिक कट्टरता विभिन्न धर्मों के मानने वालों को आपस में लड़ाती है तथा उनके बीच की दीवारों को गिरने नहीं देती ।

भारत के संविधान निर्माताओं ने इसकी काट धर्म निरपेक्षता की नीति लागू करके ढूंढ़ने का दावा किया था, परंतु समय की कसौटी पर नीति पूरी तरह खरी नहीं उतर पाई क्योंकि धर्म की मामला आस्था और विश्वास से जुड़ा है। आस्था जब जड़ हो जाती है और विश्वास जब अंधा हो जाता है तो धर्म निरपेक्षता व्यवहार में नहीं उतर पाती। यह एक ऐसी कपटपूर्ण स्थिति को जन्म देती है कि लोग अपने आपको धर्म निरपेक्ष कहकर धार्मिक आस्थाओं को ब्लेकमेल करने लगते हैं, इससे राष्ट्र का भारी नुकसान हो जाता है।

आज संविधान को लागू हुए पांच दशक से अधिक समय हो गया है। इस बीच धर्म निरपेक्षता की नीति के कारण देश का जो विकास होना चाहिए था, वह नहीं हो पाया, लोगों के बीच जैसा सद्भाव पैदा होना चाहिए था, वैसा नहीं हो पाया। इससे स्पष्ट है कि धर्म निरपेक्षता की नीति कामयाब नहीं रही, कारण यह कि इसकी बुनियाद धर्मों पर रखी गई थी ।

इसीलिए डॉक्टर कलाम नई पीढ़ी को सलाह देते हैं कि धर्म का गौण माने। धर्म बांटते हैं, वे एकता की कमर तोड़ते हैं। धर्मों में आपस में प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता का भाव है।

कबीलाई युग से ही यह परम्परा चली आ रही है कि धर्म के नाम पर लोग एकजुट हों और अपने धर्म का विस्तार करने के लिए दूसरे धर्म वालों को नुकसान पहुंचाएं। अपने धार्मिक हितों को साधने के लिए दूसरों के धार्मिक हितों को चोट पहुंचाए।

अब जबकि मानव सभ्यता 21वीं सदी में आ चुकी है, वैश्वीकरण की प्रक्रिया बहुत तेज है, अधिक से अधिक भौतिक संसाधनों की प्राप्ति के लिए खुली प्रतियोगिता का दौर तेज गति से चल रहा है, तब भारत के लोग अपने–अपने धर्मों से चिपके अपनी धार्मिक पहचान के लिए दूसरे धर्म वालों पर हमले करते रहें और विकास कार्यों में एकजुट होकर शामिल न हो सकें तो देश तो बुरी तरह पिछड़ जाएगा।

धार्मिक कट्टरता ने जिहाद की आड़ में इस्लामिक कट्टरता पैदा की है और आतंकवाद को बढ़ावा दिया। इस आतंकवाद की चपेट में भारत का महत्त्वपूर्ण राज्य जिसे धरती का स्वर्ग कहा जाता है, बुरी तरह तबाह हो चुका है।

11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका की 100 मंजिली दो ट्रेड टावर ढहाकर 5 हजार से ज्यादा लोगों की जानें इस आतंकवाद ने लीं। 13 दिसम्बर, 2001 को भारत की संसद पर हमला कर संसद का मान मर्दन किया। संसद परिसर में भारी खून–खराबा हुआ। कश्मीर में अब तक 40 हजार से ज्यादा लोगों की जानें जा चुकी हैं।

सत्तर व अस्सी के दशकों में भारत में सर्व धर्म समभाव के आधार पर स्थापित धर्मनिरपेक्षता को ठेंगा दिखाते हुए कटट्र सिखों ने पाकिस्तान की मदद से पंजाब को खालिस्तान में बदलने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगा दिया। दुनिया के सबसे बड़े धर्म निरपेक्ष लोकतंत्रा को धर्म के नाम पर एक बार पिफर बांटने के लिए कमर कस ली 2% आबादी वाले सिख धर्म के कट्टरपंथियों ने। निर्दोष गैर–सिखों को बसों, गाड़ियों और कारों से खींच–खींचकर मारना शुरू कर दिया। यह सिख आतंकवाद ही था जिसकी वजह से भारतीय नेताओं तथा मंत्रियों को सुरक्षा–व्यवस्था में केद होना पड़ा। इससे पहले राजनेता खुले में विचरते थे।

हजारों निर्दोष का खून बहाने के बाद भी जब आतंकवादी शांत नहीं हुए तो उन्होंने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर पर कब्जा करके भारत सरकार को चुनौती दी और तत्कालीन प्रधानमंत्राी श्रीमती इंदिरा गांधी ने ब्लू स्टार ऑपरेशन को अंजाम देकर आतंकियों को उनके नेता भिंडरवाला सहित गोलियों से भून दिया ।

उसका बदला चुकाने के लिए सतवंत सिंह और बलवंत सिंह नामक दो कट्टर सिंख युवकों ने प्रधानमंत्राी की सुरक्षा पंक्ति प्रवेश कर उन्हीं के सुरक्षा गार्ड बनकर उन्हें उन्हीं के घर में 1984 में मौत के घाट उतार दिया ।

इस महाघटना की प्रतिक्रिया स्वरूप देश की राजधानी दिल्ली तथा अन्य नगरों में जो भीषण मारकाट मची उसमें सैकड़ों सिख जिंदा जला दिए गए। पूरे देश में एक सम्प्रदाय के लोगों ने दूसरे सम्प्रदाय के लोगों के बीन–बीनकर मारा।

इतिहास साक्षी है धर्म निरपेक्षता की नीति के बावजूद भारत की धरती पर विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच सद्भाव की स्थिति नहीं बन पाई।

इस स्थिति का निष्पक्ष विश्लेषण करें तो इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि धर्मों की बुनियाद पर खड़ा किया गया धर्म निरपेक्षता की इमारत का ढ़ांचा कारगर साबित नहीं हुआ। इन नीति ने विभिन्न धर्मों के अनुयाइयों को एक सर्वस्वीकृत सामान्य भूमि प्रदान नहीं की ।

lnHkZ lwph %&

1. हिन्द स्वराज, (लेखक) महात्मा गांधी
2. सत्य का प्रयोग (लेखक) महात्मा गांधी
3. मेरे सपने का भारत (लेखक) डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम
4. युवा भारत (लेखक) डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम